

**Folio 24 → = Codexseite 187: Apg 11,2-14.**

Vom erhaltenen Ende des Blattes 24 ↓ (Codexseite 186) bis zum korr. Beginn des Blattes 24 → (Codexseite 187) fehlt Apg 10,41-11,1. Beginn der Seite korrekt.

Platzierung des erhaltenen Textes hypothetisch.

[ρπζ]

Stichometrie

|    |  |   |    |
|----|--|---|----|
| 01 | του <sup>11,2</sup> <sup>11,2</sup> οτε δε ανεβη πετρος εις ἱερουσα] | ΛΗΜ' ΔΙΕΚΡΕΙΝΟΝ[το προς                                       | 50 |
| 02 | αυτον οι εκ περιτο]  | ΜΗΣ' <sup>3</sup> ΛΕΓΟΝΤΕΣ ΕΙΣΗΛΘΕΝ ΠΡΟΣ ΑΝΔΡΑΣ Α[κροβυ-      | 50 |
| 03 | στιαν εχοντας και σ]   | ΥΝΕΦΑΓΕΝ ΑΥΤΟΙΣ' <sup>4</sup> ΑΡΞΑΜΕΝΟΣ ΔΕ ΠΕΤΡΟΣ ΕΞ[ε-       | 50 |
| 04 | τιθετο αυτοις κα]  | ΘΕΞΗΣ ΛΕΓΩΝ' <sup>5</sup> ΕΓΩ ΗΜΗΝ ΕΝ ΠΟΛΕΙ ἸΟΠΠΗι ΠΡΟΣ[ευ-   | 50 |
| 05 | χομενος και ειδον]   | ΕΝ ΕΚΣΤΑΣΕΙ ΟΡΑΜΑ ΚΑΤΑΒΑΙΝΟΝ ΣΚΕΥΟΣ Τ[ι                       | 48 |
| 06 | ως οθονην μεγαλ]   | ΗΝ ΤΕΣΣΑΡΣΙΝ ΑΡΧΑΙΣ ΚΑΘΕΙΜΕΝΟΝ <sup>1</sup> ΕΚ ΤΟΥ ΟΥ[ρα-     | 49 |
| 07 | νου και ηλθεν αχ]  | ΡΙΣ ΕΜΟΥ <sup>6</sup> ΕΙΣ ἩΝ ΑΤΕΝΙΣΑΣ ΚΑΤΕΝΟΟΥΝ' ΚΑΙ ΕΙΔΟΝ τα | 52 |
| 08 | τετραποδα της γης]   | ΚΑΙ ΤΑ ΘΗΡΙΑ' ΚΑΙ Τ[α] ΕΡΠΕΤΑ' ΚΑΙ ΤΑ ΠΕΤΕΙΝΑ τ[ου            | 51 |
| 09 | ουρανου <sup>7</sup> ηκουσα δε κ]                                    | ΑΙ ΦΩΝΗΝ ΛΕΓΟΥ[σ] ΑΝ ΜΟΙ ΑΝΑΣΤΑΣ ΠΕΤΡΕ Θ[υς-                  | 49 |

<sup>1</sup> Korrekt: ΚΑΘΙΕΜΕΝΗΝ.